

मूल्य विकास में श्लोकों एवं सूक्तियों की प्रासंगिकता (सदाचार,
उद्यम, देशभक्ति, सत्य, अहिंसा)

मूल्य विकास में श्लोकों एवं सूक्तियों की प्रासंगिकता (सदाचार,
उद्यम, देशभक्ति, सत्य, अहिंसा)

संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं के कवियों, लेखकों तथा कहानीकारों के द्वारा विभिन्न पाठों के माध्यम से जीवन को एक दिशा प्रदान की गयी है। जिनमें प्रत्येक पाठ का अपना-अपना महत्त्व है और उनमें जीवनमूल्यों को बताया गया है। इन जीवनमूल्यों में सदाचार, उपकार, उद्यम, अनुशासन, सहजता, सत्संगति, देशभक्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व, समयपालन आदि हैं। इन जीवनमूल्यों को दृढ़ करने में श्लोकों एवं सूक्तियों ने अपनी महती भूमिका निभाई है। श्लोकों एवं सूक्तियों को पढ़कर व्यक्ति की जीवनधारा परिवर्तित हो जाती है। छात्रों को नैतिक मूल्यों का बोध कराने हेतु पाठ्यपुस्तकों में निहित श्लोक एवं सूक्तियाँ निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। जो इस प्रकार हैं—

सदाचार—

अक्रोधेन जयेत्क्रोधम् असाधुं साधुना जयेत्।

जयेत्कदर्यं दानेन जयेत्सत्येन चामृतम्॥

अर्थ—क्रोध को क्षमा से जीतना चाहिए, दुर्जन को सज्जनता से जीतना चाहिए, कृपणता को दान से और असत्य को सत्य से जीतना चाहिए।

मा कुरु दर्पम्, मा कुरु गर्वम्

मा भव मानी, मानय सर्वम्।

मा भज दैन्यम्, मा भज शोकम्

मुदितमना भव, मोदय लोकम्।

अर्थ—अकड़ एवं अभिमान मत करो, अभिमानी मत बनो, सबका सम्मान करो, हीन भावना मत रखो, प्रसन्न रहो तथा संसार को प्रसन्न रखो।

मा वद मिथ्या, मा वद व्यर्थम्

न चल कुमार्गे, न कुर्वन्वर्थम्।

पाहि विपन्नम्, पालय दीनम्,

लालय जननी—जनक—विहीनम्।

अर्थ—झूठ मत बोलो, व्यर्थ प्रलाप मत करो, गलत रास्ते पर मत चलो, नीति की शिक्षा दो और अपने दोषों (अवगुणों) को दूर करो।

अभित्रादपि सद्वृत्तम्।

अर्थ—शत्रु से भी अच्छा आचरण सीखना चाहिए।

आचारः प्रथमो धर्मः।

अर्थ—सदाचार (अच्छा आचरण) मनुष्य का पहला धर्म है।

आचारहीनं न पनन्ति वेदाः।

अर्थ—आचारहीन मनुष्य को वेदों का अध्ययन भी पवित्र नहीं करता।

मूल्य विकास में श्लोकों एवं सूक्तियों की प्रासंगिकता (सदाचार, उद्यम, देशभक्ति, सत्य, अहिंसा)

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्प्यते

अर्थ—समस्त आगमों में आचार की प्रथम गणना होती है।

आचारः कुलमाख्यातिः।

अर्थ—मनुष्य का आचरण ही उसके कुल को बताता है।

उद्यमशीलता/श्रम में निष्ठा—

गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां सतन्यपि।

अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति।

अर्थ—चलती हुई चींटी सौ योजन तक जाती है, न चलता हुआ गरुड़ एक कदम भी नहीं जाता है।
इसलिए हमें निरन्तर कार्य करते रहना चाहिए।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः।

अर्थ—उद्यम के समान दूसरा कोई बन्धु नहीं है।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

अर्थ—उद्यम करने से कार्य सिद्ध होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं।

उद्यमे नास्ति दारिद्र्यम्।

अर्थ—उद्यम करने पर दरिद्रता की आशंका नहीं रहती।

सज्जनता का ज्ञान—

सम्पत्सु महतां चित्तं भवेदुत्पलकोमलम्।

आपत्सु च महाशैलाशिलासंघातकर्कशम्।।

अर्थ—महापुरुषों का चित्त सम्पत्ति (सुख) के समय कमल की भाँति कोमल होता है, वही विपत्ति के समय बड़े पर्वत की चट्टानों के समूह की भाँति कठोर हो जाता है।

सन्तश्चरित्रभूषणाः।

अर्थ—सज्जनों का चरित्र ही आभूषण है।

सत्यं हि सन्तः प्रतिपूजयन्ति।

अर्थ—सज्जन पुरुष सत्य की पूजा करते हैं।

सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः।

अर्थ—सज्जन व्यक्ति दूसरे का हित साधने में स्वयं लगे रहते हैं।

कोपं विषादकलनां विततं च हर्षं।

नाल्पेन कारणेन वहन्ति सन्तः।

अर्थ—सज्जन व्यक्ति क्रोध, विषाद अथवा विशेष हर्ष थोड़े से कारणों से नहीं करते हैं।

मूल्य विकास में श्लोकों एवं सूक्तियों की प्रासंगिकता (सदाचार, उद्यम, देशभक्ति, सत्य, अहिंसा)

महतिमपि श्रियमवाप्य विस्मयः

सुजनो न विस्मरति जातु किंचन।

अर्थ—सज्जन व्यक्ति बहुत बड़ी सम्पत्ति पाकर भी न तो अभिमान करते हैं और किसी को भूलते हैं।

परोपकाराय सतां विभूतयः

अर्थ—सज्जनों की विभूतियाँ (धन, ऐश्वर्य) परोपकार के लिए होती हैं।

देशभक्ति—

मातृभूमे! नमो मातृभूमे! नमः।

मातृभूमे! नमो मातृभूमे! नमः॥

तव गिरिभ्यो नमस्ते नदीभ्यां नमः।

तव वनेभ्यो नमो जनपदेभ्यो नमः॥

तव कणेभ्यो नमस्ते अणुभ्यां नमः।

मातृभूमे: नमो मातृभूमे! नमः॥

अर्थ—हे मातृभूमि तुमको प्रणाम है, तुम्हारे पर्वतों को नमस्कार है, तुम्हारी नदियों को नमस्कार है, तुम्हारे वनों और जनपदों को नमस्कार है, तुम्हारे कणों को नमस्कार है, तुम्हारे अणुओं को नमस्कार है। हे मातृभूमि! तुम्हें प्रणाम है।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

अर्थ—जन्मभूमि हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थ—माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ होती है।

सत्य—

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

नासत्यं च प्रियं ब्रूयात् एष धर्मसनातनम्॥

अर्थ—सत्य एवं प्रिय बोलना चाहिए, परन्तु अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। प्रिय असत्य भी नहीं बोलना चाहिए यही सनातन धर्म है।

ये वन्दतीह सत्यानि प्राणत्यागेऽप्युपस्थिते।

प्रमाणभूता भूतानां दुर्गण्यतितरान्ति ते॥

अर्थ—प्राणत्याग की परिस्थिति में भी जो सत्य बोलता है, वह प्राणियों में प्रमाणभूत है। वह संकट पार कर जाता है।

सत्यं वाचः प्रतिष्ठा, सत्ये सर्वं प्रतिष्काम्।

अर्थ—सत्य वाणी की प्रतिष्ठा है। सत्य के ऊपर ही सबकुछ प्रतिष्ठित है।

तदेतत् पुष्पं फलं वाचो यत् सत्यम्।

अर्थ—जो यह सत्य है वह वाणी का फूल और फल है।

यद् भूतहितमत्यन्तम् एतत्सत्यं मतं मम।

अर्थ—जो समस्त प्राणियों का सर्वोच्च हित हो वही सत्य है। ऐसा मेरा मत है।

मूल्य विकास में श्लोकों एवं सूक्तियों की प्रासंगिकता (सदाचार, उद्यम, देशभक्ति, सत्य, अहिंसा)

सत्यं वद धर्मं चर।

अर्थ—सत्य बोलो और धर्म पर चलो

सुगा ऋतस्य पन्थाः

अर्थ—सत्य का मार्ग सुगम होता है।

अहिंसा—

अहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा परो दमः।

अहिंसा परमं दानमहिंसा परमं तपः॥

अर्थ—अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम आत्म संयम है, वही परम दान है और वही परम तप है।

अहिंसा परमोयज्ञस्थाहिंसा परं फलम्।

अहिंसा परमं मित्रमहिंसा परमं सुखम्॥

अर्थ—अहिंसा परम यज्ञ है, अहिंसा परम फल है, वह परम मित्र है और वही परम सुख है।

दृढ निश्चय—

विध्नैर्मुहुर्मुहुरपि प्रतिहन्यमानाः।

प्रारब्धमुन्तमजना न परित्यजन्ति।

अर्थ—उत्तम वर्ग के मनुष्य विधनों के बार-बार आघात करने पर भी अपने शुरु किये गये कार्य को नहीं छोड़ते अर्थात् कार्य पूर्ण करके ही छोड़ते हैं।

त्याग—

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा मागृथः कस्य सिध्दधनम्।

अर्थ—इस जगती (कार्यरूपा प्रकृति) में जो जगत् है वह ईश द्वारा बसा हुआ है। इसलिए त्यागपूर्वक भोग करो। किसी दूसरे के धन की आकांक्षा मत करो।

सामाजिक उत्तरदायित्व—

तनयं पाठय तनयां पाठय।

शिक्षय नीतिं दोषं वारय।

करूपकारम्, कृत्यमुदारम्

अपनय दूरे चित्रविकारम्।

अर्थ—पुत्र को पढ़ाओ, पुत्री को पढ़ाओ, नीति की शिक्षा दो तथा दोषों को दूर करो। उदार बनो और चित्त के विकार को दूर करो।

कल्याणं तदा एव भवति यदा स्त्रीपुरुषयोः समभावो भवेत्।

कल्याण तभी होगा जब स्त्री तथा पुरुष में समानता होगी।

साहस—

षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।

निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता॥

सम्पत्ति की इच्छा करने वाले व्यक्ति को ये छः दोष त्याग देना चाहिए। निद्रा, तन्द्रा (जागते हुए सोना), भय, क्रोध, आलस तथा धीरे-धीरे कार्य करना।

साहसे श्रीः वसति।

डॉ. नीलम यादव ,राज्य हिंदी संस्थान ,वाराणसी

मूल्य विकास में श्लोकों एवं सूक्तियों की प्रासंगिकता (सदाचार,
उद्यम, देशभक्ति, सत्य, अहिंसा)

